पाठ 4
ग्राम श्री

प्र०1→ कविता में किस मौसम के सौंदर्य का वर्णन है ?

उ०→ कविता में शिशिर ऋतु के मौसम के सौंदर्य का वर्णन है। इसी मौसम के ढाक, अमरूद और पीपल के पत्ते गिरते हैं। आम के वृक्षों में मंजरियाँ फूटती हैं। चारों ओर फूल-फूल खिलते हैं। तितलियाँ आलू, गोभी, पालक, धनिया आदि की फसलें भी खूब लहलहाती हैं।

प्र०2→ अरहर और सनई के खेत कवि को कैसे दिखाई देते हैं ?

उ०→ अरहर और सनई के सुनहरे खेतों को देखकर कवि को लगता है कि मानो वसुधा ने अपनी कमर पर सुनहरे रंग के घुंघरुओं वाली करधनी धारण कर रखी है। आशय यह है कि अरहर और सनई पर सुनहरे रंग की बजती हुई फलियाँ उग आई हैं।

प्र०3→ भाव स्पष्ट कीजिए -

1) बालू के - - - - - - - - - - सतरंगी है

उ०→ गंगा तट की रेत बल-खाते साँप की तरह टेढ़ी है और (जिसके पर सुनहरे रंग की बजती हुई फलियाँ उग आई हैं) वह विविध रंगों वाली है।

प्र०4→ निम्न पंक्तियों में कौन सा अलंकार है

तिनकों के हरे हरे तन पर
हिल हरित रुधिर है रहा झलक

उ०→ 1. अनुप्रास - 'हिल हरित रुधिर है रहा' में 'ह' और 'र' की आवृत्ति है।
2. पुनरुक्ति प्रकाश - हरे हरे
3. मानवीकरण - तिनकों का तन और रुधिर दिखाया गया है। उन्हें मानव की तरह चित्रित किया गया है।

प्र०5→ इस कविता में जिस गाँव का चित्रण हुआ है वह भारत के किस भू-भाग पर स्थित है ?

उ०→ इस कविता में गंगा के तट पर बसे गाँव का चित्रण हुआ है।

देखा
15.11.15

पाठ - 5

चंद्र गहना से लौटती बेर

प्र 1. सरसों को 'सयानी' कहकर कवि क्या कहना चाहता होगा?

उ. सरसों को 'सयानी' कहकर कवि कहना चाहता है कि अब उसकी फसल पककर तैयार हो चुकी है। उसका पूरा विकास हो चुका है।

प्र 2. अलसी के मनोभावों का वर्णन कीजिए।

उ. अलसी अल्हड़ नायिका है। उसकी कमर लचीली है, पतली है और स्वभाव से हठीली है। उसने अपने शीश पर नीले फूल धारण किए हुए हैं। वह मानों सबको प्रेम का खुला निमंत्रण देकर कह रही है - जो भी मुझे छुए, मैं उसे अपना दिल दे दूँगी।

प्र 3. 'चाँदी का बड़ा-सा गोल खंभा' में कवि की किस सूक्ष्म कल्पना का आभास मिलता है?

उ. पोखर के जल में सूर्य की किरणें सीधी पड़ती हैं तो लगता है जैसे पानी के नीचे चाँदी का बड़ा गोल खंभा हो। रंग, चमक और रूप की समानता के कारण यह कल्पना मनोरम बन पड़ी है।

प्र 4. कविता के आधार पर 'हरे चने' का सौंदर्य अपने शब्दों में चित्रित कीजिए।

उ. हरा चना आकार में ठिगना है। आज वह दूल्हे के रूप में सजकर खड़ा है। उसने अपने सिर पर गुलाबी फूलों की पगड़ी पहन रखी है। इस प्रकार वह सुशोभित हो रहा है।

प्र 5. 'इस विजन में ...... अधिक है' - पंक्तियों में नगरीय संस्कृति के प्रति कवि का क्या आक्रोश है और क्यों?

उ. उपर्युक्त पंक्तियों में कवि ने नगरीय संस्कृति की व्यावसायिकता पर आक्रोश प्रकट किया है। उनके अनुसार, नगर के लोग व्यापार को महत्व देते हैं। वे प्रेम और सौंदर्य से बहुत दूर हैं। वे प्रकृति से भी कट चुके हैं। कवि इसे नगर संस्कृति का दुर्भाग्य मानता है।

19-11-19

पाठ - 6

मेघ आए

प्र॰1- लता ने बादल रूपी मेहमान को किस तरह देखा और क्यों?

उ॰1- लता ने बादल रूपी मेहमान को किवाड़ की ओट से छिपकर देखा। क्यों - वह मानिनी है। वह अपने प्रियतम के कई दिनों के बाद आने पर उनसे रूठी हुई है और उन्हें देख किवा भी नहीं रह पाती।

प्र॰2- भाव स्पष्ट कीजिए -

(क) क्षमा करो गाँठ खुल गई अब भरम की

- प्रियतमा अपने प्रिय से क्षमा माँगते हुए कहती - मुझे क्षमा करना। मैंने सोचा था कि तुम नहीं आओगे। परंतु तुम खूब आए हो इसलिए मेरे मन का संदेह मिट गया।

(ख) बाँकी चितवन उठा, नदी ठिठकी, घूँघट सरके।

- बादलों के आने पर नदी मद - भरे ढंग से बहने लगी। उसका जल साफ - स्वच्छ दिखने लगा। मेहमान के आने पर गाँव की नववधुएं बाँकी दृष्टि से उसे निहारने लगीं। वे अपने घूँघट सरकाकर उसे देखने लगीं।

प्र॰3- मेघों के लिए 'बन-ठन के, सँवर के' आने की बात क्यों कही गई है?

उ॰- मेघों के लिए 'बन-ठन के, सँवर के' आने की बात इसलिए कही गई है क्योंकि उनके आने पर गाँववासियों के मन में ठीक वैसे ही उत्साह होता है, जैसा कि किसी सजे-सँवरे दामाद के आने पर होता है। अतः मेघों के लिए सजे-सँवरे शहरी दामाद का उपमान बिल्कुल ठीक है।

प्र॰4- कविता में जिन रीति-रिवाजों का मार्मिक चित्रण हुआ है, उनका वर्णन कीजिए।

उ॰- इस कविता में गाँव के किसी दामाद के आने पर छाए उल्लास का वर्णन किया हुआ है। गाँववासियों का उत्साह, खुशी और जिज्ञासा से मेहमान को देखना, बूढ़ी स्त्रियों का उनकी अगवानी करना ग्रामीण परंपरा है। इससे ग्रामीण वासियों की अतिथि-सत्कार की भावना प्रकट होती है।

प्र॰5- निम्नलिखित किसके प्रतीक हैं -

(1) धूल - यह अतिथि के आगमन से अति उत्साहित घर की चंचला युवती का प्रतीक है।

(2) लता - लता विरह वेदना में तड़पती मानिनी नायिका है, जो बादल के देर से आने पर मान प्रकट करती है।

19-11-19

Scanned by CamScanner

पाठ - ४

यमराज की दिशा

प्र०१→ कवि को दक्षिण दिशा पहचानने में कभी मुश्किल क्यों नहीं हुई ?

उ०१→ माँ के बार बार समझाने अर्थात बचपन से मिले गहरे संस्कारों के कारण कवि को दक्षिण दिशा पहचानने में कभी मुश्किल नहीं हुई।

प्र०२→ कवि ने ऐसा क्यों कहा कि दक्षिण को लाँघ लेना संभव नहीं था ?

उ०→ दक्षिण दिशा का कोई ओर - छोर नहीं है। वह अनंत है। इसलिए उसे लाँघ लेना संभव नहीं था। प्रतीकार्थ यह है कि शोषण -व्यवस्था का कोई निश्चित स्वरूप नहीं होता। यह व्यवस्था नए नए रूप धारण करती रहती है और बढ़ रही है। इसलिए कोई हमेशा - हमेशा के लिए मुक्त नहीं हो सकता।

प्र०३→ कवि के अनुसार आज हर दिशा दक्षिण क्यों हो गई है ?

उ०→ कवि के अनुसार, दक्षिण दिशा दक्षिणपंथी विचारधारा, पूंजीवादियों और शोषकों को बताता है। कवि को आज की स्थितियाँ देखकर लगता है कि आज सब ओर पूंजीवादी शोषकों का बोल-बाला हो गया है। जहाँ भी देखें, वहीं आम मनुष्य का शोषण हो रहा है।

प्र०४→ भाव स्पष्ट कीजिए -

सभी दिशाओं - - - - - - - - - - - - विराजते हैं -

उ०४→ कवि कहता है कि शोषण करने वाले लोग यमराज की भाँति क्रूर हैं। वे सर्वत्र ठाट - बाट से निवास करते हैं। सब जगह उनका एक-सा हाल है। वे क्रोध, घृणा और क्रूरता

15.11.19

पाठ - 8

बच्चे काम पर जा रहे हैं

प्र1. कवि का मानना है कि बच्चों के काम पर जाने की भयानक बात को विवरण की तरह न लिखकर सवाल के रूप में पूछा जाना चाहिए कि 'काम पर बच्चे क्यों जा रहे हैं?' कवि की दृष्टि में उसे प्रश्न के रूप में क्यों पूछा जाना चाहिए?

उ1. किसी बात का विवरण देने का अर्थ है - बात को सामान्य मानकर उसकी जानकारी भर देना। विवरण के साथ लेखक का कोई भावनात्मक लगाव नहीं होता। न ही कोई गहरी चिंता होती है। परंतु प्रश्न के रूप में प्रस्तुत करने से एक चिंता होती है, जिज्ञासा और तड़प होती है, समस्या के साथ गहरा जुड़ाव होता है। अतः लेखक चाहता है कि बाल-मजदूरी की समस्या के साथ समाज का गहरा सरोकार होना चाहिए। उसे सामान्य बात मानकर नज़रअंदाज़ नहीं करना चाहिए।

प्र2. आपने अपने शहर में बच्चों को कब-कब और कहाँ-कहाँ काम करते देखा है?

उ. मैंने अपने शहर में बच्चों को अनेक स्थलों पर काम करते देखा। चाय की दुकान पर, होटलों में, विभिन्न दुकानों पर, घरों में, निजी कार्यालयों में। मैंने उन्हें सुबह से देर रात तक, हर मौसम में काम करते देखा है।

प्र3. कवि का काम पर जाना धरती के एक बड़े हादसे के समान क्यों है?

उ. कवि ने बच्चों के काम पर जाने की घटना को हादसा इसलिए कहा है क्योंकि यह अनेक रीति और घोर अन्याय है। हर बच्चे को जन्म से ही सब सुख-सुविधाएँ मिलनी चाहिए। उन्हें खेल-कूद, मनोरंजन और पढ़ाई-लिखाई का अवसर अवश्य मिलना चाहिए। जो बच्चे काम पर जा रहे हैं, वे गरीबी और मजबूरी के कारण जाते हैं। यह उनके साथ सरासर अन्याय है। इससे उनका जीवन अंधकार में डूब जाता है। वे जीवनभर गरीब एवं मजदूर बनकर रह जाते हैं। अतः उनका बचपन में काम करना एक भयानक हादसा है।

प्र5. दिन-प्रतिदिन के जीवन में हर कोई बच्चों को काम पर जाते देख रहा/रही है, फिर भी किसी को कुछ अटपटा नहीं लगता। इस उदासीनता के क्या कारण हो सकते हैं?

उ. इस उदासीनता के अनेक कारण हैं -
पहला कारण - विवशता। लोग सोचते हैं कि वे इस दिशा में कुछ नहीं कर सकते। इसलिए वे धीरे-धीरे उदासीन हो जाते हैं।

Scanned by CamScanner

दूसरा कारण - लोग अपनी अपनी दुनिया में इतने मस्त हैं कि वे दूसरों की तरफ देखकर भी नहीं देखते। इसलिए उन्हें बाल-श्रम की समस्या ही नहीं प्रतीत होती।

तीसरा कारण - जागरूक न होना। अधिकतर मनुष्य यह सोच ही नहीं पाते हैं कि हर बच्चे को प्राथमिकता सुख-सुविधा दिलाना सरकार का कर्तव्य है। इसलिए वे भगवान को और भाग्य को दोष देकर प्रयत्न करना बंद कर देते हैं।

15.11.19

Scanned by CamScanner